सूर मल्हार (संक्षिप्त विवरण)

आरोह :– निसारिमपनिसांरिं

अवरोह :– निध – मपनिध – प, रि – रिप, मरि, गगरि रिरिसानिसा ।

जाति :– औडव – वक्र – संपूर्ण ।

ग्रह :– षड्ज ।

अंश :– धैवत्, क्योंकि इसके बिना यह राग सारंग से अलग नहीं हो सकता ।

न्यास :– पंचम ।

अपन्यास :– ऋषभ ।

मुख्य अंग :– सा सां – निध – मप सांनिध – प ।

समय :– सारंग के समान दोपहर : मौसमी राग होने से वर्षा में आठों प्रहर ।

प्रकृति :– न तरल न गंभीर ।

सूर मल्हार (विशेष विवरण)

सूर मल्हार राग के लिए किंवदन्ती है कि वह महाकवि श्री सूरदासजी का बनाया हुआ है । इस राग में दो निषाद, शुद्ध धैवत और अतीव अल्प मात्रा में विशेष ढंग से कोमल गान्धार का प्रयोग किया जाता है ।

सारंग में अवरोह करते समय निध – मप निध – प, इतनी क्रिया मात्र से सूर मल्हार का आविर्भाव होता है । तान–क्रिया करते समय सारंग के अवरोह में सीधे ढंग से धैवत का प्रयोग गुणिसम्मत है । इस राग में कोमल गान्धार का अत्यल्प मात्रा में प्रयोग होता है और वह एक विशेष ढंग से ही होता है । उसके लगाने का ढंग अवरोह में 'गगरि रिरिसा निसा' एकमात्र यही है । किन्तु गुरु के सान्निध्य में न सीखने वाले 'सूर मल्हार' में 'मल्हार' शब्द का प्रयोग होने से ऐसा मान लेते हैं कि उसमें 'मल्हार' का कुछ अंग दिखाना ही चाहिये और तदनुसार उसमें गमरिसा अथवा नि–निसा की स्वरावलियों का उपयोग करते हैं । वास्तव में यह नहीं करना चाहिये, क्योंकि इस राग की अभिव्यक्ति की प्राण–क्रिया 'गगरि– रिरिसानिसा' और 'निध – मप निध – प –' यही दो हैं । बीच–बीच में मल्हार अंग को दिखाने के लिए रि – म, रि–प यों 'रि–प' की संगति ली जाती है, लेनी चाहिये ।

तान–क्रिया में 'निसारिमप, पनिसांनिधप मपनिनिधप ममरिसा' यों सारंग अंग से जाकर और देश अंग से पंचम तक लौटकर 'ममरिसा' से षड्ज पर विन्यास करना होता है ।

मल्हार की वह गंभीरता जो गान्धार और निषाद के विशेष आन्दोलन से अभिव्यक्त होती है, उसका इसमें अभाव है ।

इसमें प्राय: वर्षा का और वर्षा में विरह का वर्णन मिलता है । मौसमी राग होने के कारण यह वर्षा में आठों प्रहर बरता जा सकता है ।

Scanned by CamScanner